संपादकीय

एक राहत यह भी.....

हम कर्नाटकवासियों के लिए यह गर्व की बात है कि कर्नाटक में उच्च शिक्षा स्तर पर इसी शैक्षणिक सत्र से नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 लागू की गई। जिसमें आधुनिक भारतीय भाषा के अध्ययन के तहत कर्नाटक की राज्य भाषा कन्नड को अनिवार्य कर दिया। परिणाम स्वरूप भारत की अन्य भारतीय भाषाओं के अध्ययन का चयन करने में छात्र गण हिचकिचाने लगे कारण उनके अनुसार अंग्रेज़ी उच्च शिक्षा के लिए आवश्यक होने के कारण कन्नड और अंग्रेजी का चयन उन्होंने किया परिणामस्वरूप हिंदी सहित अन्य आधुनिक भारतीय भाषाओं के शिक्षकों की नौकरी का सवाल खतरे में आ गया। हिंदी सहित अन्य भारतीय भाषाएँ जैसे संस्कृत, उर्दू, तमिल, मलयालम आदि भाषाओं को बचाने हेतु अध्यापकों तथा छात्रों ने अदालत का दरवाज़ा खटखटाया। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 किसी भी विषय की अनिवार्यता को लागू नहीं करती है। किसी भी विषय को अनिवार्य रूप से लागू करना राष्ट्रीय शिक्षा नीति के अनुसार नहीं है। अदालत में पक्ष-विपक्ष की सुनवाई के बाद आज दिनांक 16-12-2012 को अदालत ने राज्य सरकार को यह नोटिस दिया है कि अगले आदेश आने तक कन्नड को अनिवार्य नहीं करना चाहिए। कन्नड सीखनेवालों को कन्नड सीखने में कोई बाधा नहीं है पर जो छात्र कन्नड नहीं सीखना चाहते, उनके लिए अनिवार्य नहीं है। जिससे हिंदी सहित अन्य भारतीय भाषाओं के शिक्षक एवं शिक्षार्थियों को थोडी रहात मिली है। वैसे हम किसी भी भाषा के अध्ययन अध्यापन के विरोधी नहीं है पर उसके अनिवार्य रूप से लागू करना छात्रों की चयन स्वतंत्रता को छीनने जैसा था। खैर...

आखर हिंदी पत्रिका का दूसरा अंक आज आप सभी सुधि पाठकों के सम्मुख रखते समय इसलिए भी हर्ष का अनुभव हो रहा है क्योंकि हमें **ISSN** नंबर मिल गया जिससे पत्रिका की साख बनी रहेगी मगर हम इस ख्याति पर आराम नहीं करने जा रहें हैं, हमारा उद्देश्य 'आखर' को अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर मानक पत्रिकाओं में सर्वश्रेष्ठ बनाना और 'आखर' को मानक अनुक्रमण डेटाबेस में अनुक्रमणिक करने के साथ यूजीसी केयर लिस्ट में सूचीबद्ध करना हैं। इस पत्रिका में अपने शोधालेख छापने में कई शोधार्थियों, अध्यापकों तथा रचनाकारों को सुविधा हो सकती है। आखर के इस अंक में इस बार शोधालेख, कहानी, कविता, लोक साहित्य, संस्मरण, साक्षात्कार के अलावा स्मृति शेष के अंतर्गत मन्नु भंडारी के साहित्यिक अवदान की चर्चा प्रस्तुत है। आशा है आपको यह अंक पसंद आएगा। आपका स्नेह और सहयोग हमें हमेशा मिलता रहे ताकि हम **'आखर'** के माध्यम से साहित्य की सेवा कर सकें।

इति नमस्कारन्ते

प्रधान संपादिका
प्रतिभा मुदलियार